आश्रम साधक परिवार सत्संग

194वां जीवन प्रबंधन व्याख्यान

दिनांक 22 फरवरी, 2015 को पावन चिंतन धारा आश्रम के 194वें जीवन प्रबंधन व्याख्यान के अवसर पर श्रीगुरु भैयाजी ने साधक परिवार के साथ आश्रम की विचारधारा के बारे में गंभीर विवेचना की। पावन चिंतन धारा आश्रम की स्थापना 17 फरवरी, 2010 को हुई थी। इन पांच वर्षों में आश्रम ने श्रीगुरु जी के मार्गदर्शन में धर्म और राष्ट्र पर आधारित 300 से अधिक ज्ञानवर्धक कार्यक्रम एवं सत्संग किए। 80 से भी अधिक स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया। आश्रम के माध्यम से लगभग 130 बच्चों की शिक्षा का कार्य निरंतर जारी है। 10 गांव की पदयात्रा, 20 चौपालों का आयोजन हो चुका है।

आज यह आश्रम 3000 से अधिक परिवारों का एक समूह है, यूं तो लगभग हर शहर में आश्रम के सदस्य हैं लेकिन औपचारिक तौर पर 13 केंद्रों से आश्रम की विचारधारा का प्रचार-प्रसार होता है और सेवा कार्य किए जाते हैं। श्रीगुरु भैयाजी ने साधक परिवार को समझाया कि आज भारत में लीडरशिप की कमी है। ज्यादातर भारतीय प्रलोभन से किसी जगह खड़े मिलते हैं। लोग राम को तो मानते हैं लेकिन राम की नहीं मानते। लोग रामायण को मानते हैं, रामायण की नहीं मानते। उनका सवाल था कि हम जिस वक्त भारतीय होने पर गर्व करते हैं तो किस भारत पर गर्व करते हैं?अगर हम इतने शूरवीर थे तो भारत कभी हारता नहीं, कभी गुलाम नहीं बनता, कभी सृष्टि के साथ खिलवाड़ नहीं करता, कभी स्त्रियों के साथ अनाचार नहीं होता। यानी जिस इतिहास पर हम गर्व करते हैं उसे फिर से पढ़ने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि समय आने पर इसी सत्संग में उस इतिहास से मैं आपको अवगत कराऊंगा।

पावन चिंतन धारा आश्रम द्वारा (दिनांक 29 मार्च, 2015 को) 199वां जीवन प्रबंधन व्याख्यान कार्यक्रम में श्रीगुरु जी ने राम-राम के साथ सभी का अभिवादन स्वीकार करते हुए कहा, ''द्वेष, झूठ, पाखण्ड, अंधविश्वास जैसे विकार हमारे पैर में बेड़ियों की तरह हैं जो हमें स्वयं को सागर में तैरने से रोकती हैं और कुछ समय बाद डुबो देती हैं। मनुष्य किसी को कुछ दे नहीं सकता, देने वाला तो सिर्फ ईश्वर है।'' श्रीगुरु जी ने शरीर, प्राण, आत्मा व आत्मा का वास्तविक अर्थ समझाते हुए उसकी पवित्रता/अपवित्रता का विस्तार से वर्णन किया। अध्यात्म क्या है? क्या हम आध्यात्मिक हैं, के संदर्भ में आपने बताया कि हम अध्यात्म को बाहर ढूंढते हैं जबकि अध्यात्म हमेशा शरीर के भीतर के मंथन से प्रारंभ होता है। हमारे अंदर अनेक अपेक्षाएं भरी होती हैं जिस पर विजय पाना अध्यात्म को प्राप्त करना होता है।

स्वामी विवेकानंद जयंती

श्रीगुरु भैयाजी ने स्वामी विवेकानंद जयंती के शुभ अवसर पर गाजियाबाद के वसुंधरा सेक्टर-3 के मंदिर में अध्यात्म और ध्यान विषय पर व्याख्यान दिया। इस अवसर पर पावन चिंतन धारा आश्रम परिवार के सभी उपकेंद्रों से भी साधक परिवार सदस्य उपस्थित थे। सुर साधक मंडली ने सुंदरकांड व भजनों की प्रस्तुति की।

भंडारे की व्यवस्था आश्रम परिवार की तरफ से की गयी थी। ज्ञातव्य हो कि इस दिन आश्रम परिवार पावन चिंतन धारा चैरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक श्रीगुरु भैयाजी का जन्मदिन दिव्यता के साथ मनाता है।

श्रीगुरुजी और बच्चे, आत्मनिर्माण दिवस पर

पावन चिंतन धारा आश्रम प्रत्येक वर्ष 'स्वामी विवेकानंद जयंती' के दिवस को आत्मनिर्माण दिवस के रूप में मनाता है। इस अवसर पर श्रीगुरु भैयाजी ने हिसाली स्थित निर्माणाधीन पावन चिंतन धारा आश्रम में 'गप्प चौराहा' कार्यक्रम के अंतर्गत आश्रम और आस-पास के गांव के बच्चों को स्वामी विवेकानंद के जीवन से परिचित कराया। गप्प चौराहा के समापन के पश्चात श्री गुरु भैयाजी ने आश्रम में वृक्षारोपण भी किया।

स्वामी विवेकानंद- व्याख्यान कार्यक्रम

श्रीगुरु भैया जी ने स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर 15 जनवरी 2015 को हंसराज कक्कलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) में एक व्याख्यान दिया। आपने इस व्याख्यान के माध्यम से युवा वर्ग को विलक्षण बनने के लिए स्वामी जी के जीवन से सीख लेने की प्रेरणा दी।

VISION 2015

Kundli Industries Association द्वारा आयोजित "Vision- 2015'' कार्यक्रम में पावन चिंतन धारा आश्रम के संस्थापक श्रीगुरु भैयाजी द्वारा दिए गए व्याख्यान को विद्वानों ने न केवल धैर्य से सुना अपितु वर्ष-2015 के लक्ष्यों का निर्धारण भी किया।

आश्रम द्वारा आयोजित पावन सुंदरकाण्ड पाठ

पावन चिंतन धारा आश्रम निर्माण में सहयोग हेतु भिक्षाटन के माध्यम से धनार्जन किया जाता है। जनवरी से मार्च माह में अनेक साधक परिवार सदस्यों ने अपने निवास पर पावन सुंदरकाण्ड पाठ का आयोजन कराया। ये सदस्य हैं- श्री तरुण शर्मा, श्रीमती वंदना शर्मा, श्री रामरूप शर्मा, श्री लखवीर सिंह, श्रीमती रानो, श्री सतीश चंद्र शर्मा, श्री हरेती आर.मीना, श्रीमती नेहा गुलाटी, श्री मनोज भारद्वाज।आश्रम आपका हृदय से आभार प्रकट करता है।

जेल कैदियों के कल्याणार्थ परमशांति कार्यक्रम आयोजित

फिरोजाबाद जेल परिसर में आयोजित 'परमशान्ति' कार्यक्रम में कैदियों के संग श्रीगुरु भैयाजी ने कुछ घंटे बिताये। यह कार्यक्रम नववर्ष (03 जनवरी, 2015) को आयोजित किया गया था। कैदियों के साथ वार्तालाप प्रारंभ करते हुए

आपने कहा कि ''दुनिया में वह बुरा नहीं है जो अनजाने में पाप करता है बल्कि दुनिया में बुरा वह है जो जानबूझ कर पाप करता है अनजाने में किये पाप को तो ईश्वर क्षमा भी कर सकता है लेकिन जानबूझ कर किये गए पाप को ईश्वर कभी क्षमा नहीं करता।'' उन्होंने कुरुक्षेत्र में हुए श्रीकृष्ण-अर्जुन के संवाद की चर्चा करते हुए ईश्वर क्या है? कौन हैं? शरीर क्या है? मन-बुद्धि क्या है? विवेक क्या है? विवेक का मन पर इस्तेमाल कैसे करते हैं आदि विषयों को विस्तार से समझाया और साथ ही एक सन्देश दिया कि ''जो भी व्यक्ति ईश्वर, खुदा या रब, जिसको भी मानता हो, जिस किसी भी धर्म का हो, उस धर्म को पढ़े-जाने और उसे आत्मसात करे, जीवन जीना सरल हो जायेगा।''

आगे आपने कहा कि सभी धर्मों का सम्मान करना चाहिए। आपने स्वरचित कविता के माध्यम से एक सन्देश भी दिया-

''नव वर्ष है, नव श्वास लो,

जो बीता, वो भुला कर, नव राह को थाम लो।''

वहां उपस्थित कैदियों ने श्रीगुरु भैयाजी का जोरदार स्वागत किया। सिरसा के विधायक श्री हरिओम यादव, अपर महानिदेशक, श्री उमाशंकर शर्मा, अपर महानिदेशक, श्रीमती ज्योत्स्ना शर्मा और जेल अधीक्षक श्री पी.एन. पाण्डेय तथा उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने भी समारोह को संबोधित करते हुए श्रीगुरु भैयाजी द्वारा बताये आदर्शों पर चलने की बात कही इस अवसर पर श्रीगुरु भैया जी ने स्नेहस्वरूप कैदियों को अपनी तरफ से कम्बल का वितरण भी किया। श्रीगुरु भैयाजी के इस कार्य से वहां उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी कम्बल वितरित कर इस कार्य में सहयोग किया।

Leadership & Management Program

Kesav Human Development Foundation द्वारा श्रीगुरु भैयाजी का 18 जनवरी, 15 फरवरी और 22 मार्च, 2015 को जवाहर लाल नेहरु नेशनल यूथ सेंटर, नई दिल्ली में Leadership & Management विषय पर व्याख्यान कार्यक्रम हुआ जिसमें कारपोरेट जगत के अनेक सदस्य ने उपस्थित थे।

Lecture on GOING BEYOND LIMITS

दिनांक 15 मार्च, 2015 को चेतना-सेंटर ऑफ बिजनेस एक्सीलेंस द्वारा दिल्ली में GOING BEYOND LIMITS विषय पर एक सेमिनार आयोजित की गई जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में श्रीगुरु भैया जी ने अपने विचार रखे।

भारत उत्सव 21-जनवरी, 2015

दिनांक 25 जनवरी, 2015 को गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर आश्रम की ओर से भारत उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम में विश्वविख्यात नृत्यगुरु श्री जितेंद्र महराज जी ने अपने शिष्यों के साथ नृत्य प्रस्तुति में साथ दिया। भारत माता की पूजा-आरती की प्रथा का प्रारंभ करते हुए श्रीगुरु भैयाजी ने सर्वप्रथम दीप प्रज्ज्वलन किया जिसमें शहीदों को प्राथमिकता देते हुए तीन दीपक, जिसमें पहला दीप शहीदों की याद में, दूसरा मां भारती का तथा तीसरा कार्यक्रम के शुभारंभ का प्रज्ज्वलित किए गए।

इस अवसर पर श्रीगुरु भैयाजी ने कहा कि 'हम भारत के गौरवशाली इतिहास की बात हमेशा करते हैं परन्तु 66वें गणतंत्र दिवस पर मैं आपसे यह सोचने को कह रहा हूं कि जिस देश का इतिहास लगभग ढाई लाख वर्ष पुराना हो जिसने अनाज से लेकर गणित तक, गहनों से लेकर संगीत तक, विमानों से लेकर योग तक दुनिया को सब कुछ दिया, जिसकी सैन्य शक्ति प्रखर थी जहां द्वापर युग में अर्थात लगभग 5.5 हजार साल पहले नाभिकीय हथियारों का प्रयोग हुआ। वह भारत आखिर गुलाम क्यों हुआ? इसका विभाजन क्यों हुआ और आज भी भारत स्वतंत्रता के सही मायने खोज रहा है। मैं यह बात इसलिये छेड़ रहा हूं जिससे हमें यह भान हो कि जो गलतियां हमने 10वीं शताब्दी से आज तक अनेक बार कीं वहीं गलतियां कहीं हम आज भी तो नहीं दोहरा रहे। जो हमें राष्ट्र धर्म से दूर कर रहे हैं हम आज भी उन्हीं पंथों और जातियों में बुरी तरह फंसे हुए हैं। इन परिस्थितियों से निबटने के लिए युवाओं को अपने धर्म का तत्व। अपना इतिहास समझना होगा।

अंत में विचार करने के लिए एक प्रश्न के साथ उन्होंने अपनी बात समाप्त की। उन्होंने कहा- ''माता-पिता, शिक्षक, धर्म गुरु, धर्म और राष्ट्र को अलग न करें। यदि राष्ट्र न बचा तो धर्म कहां बचेगा?''

अंत में गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर उत्सव मनाने की तैयारी होने लगी और उड़ने लगे अबीर-गुलाल और बस चारो ओर आनंद ही आनंद...

राम-लक्ष्मण-जानकी, जय बोलो हुनमान की।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री जी.वी.जी. कृष्णमूर्ति पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त ने भारत के गौरव पर अपने विचार प्रस्तुत किये। उत्सव के अंत में रंगारंग कार्यक्रम के साथ भारत माता की आरती और राष्ट्रगान हुआ। इस कार्यक्रम में उपस्थित विशिष्टजनों में विधायक श्री सुरेश बंसल जी, व्यापार मण्डल अधयक्ष श्री वीके अग्रवाल, आर.के.जी.आई.टी. के चेयरमैन श्री दिनेश गोयल जी, ग्रेटर नोएडा से श्री सुशील गोस्वामी जी, विश्वविख्यात नृत्य गुरु श्री जितेंद्र महाराज जी और उनकी शिष्या सुश्री नलिनी जी, सुश्री कमलिनी जी, एडवोकेट श्री गौरव गोयल, जी.आइ.आइ.टी के डायरेक्टर श्री संजीव गोयल, श्री देवेंद्र हितकारी जी भी उपस्थित थे।

आश्रम के सभी उपकेद्रों पर पावन सुंदरकाण्ड पाठ

पावन चिंतन धारा आश्रम के सभी उपकेंद्रों पर परिवार के सदस्यों ने 18 जनवरी और 15 मार्च, 2015 को संगीतमय पावन सुंदरकाण्ड पाठ का आयोजन कराया। ईश्वर की कृपा आप सब पर हमेशा बनी रहे। आश्रम आपका हृदय से आभार प्रकट करता है।

उपकेंद्रों पर व्यवहारिक शिक्षा व अल्पाहार कार्यक्रम

आश्रम के मुख्य केंद्र द्वारा निर्धारित व्यवहारिक शिक्षा व अल्पाहार कार्यक्रम के अंतर्गत पावन चिंतन धारा आश्रम के सभी उपकेंद्रों पर आश्रम परिवार के सदस्यों ने 15 फरवरी (2015) को निर्धन बच्चों को व्यवहारिक शिक्षा का पाठ पढ़ाया और अभ्यास भी कराया। बच्चों को संस्कार व उचित व्यवहार का पालन करने का पाठ पढ़ाते हुए बच्चों के लिए अल्पाहार का भी प्रबंध किया।

नूतन संवत्सर उत्सव-2072 राष्ट्रीय संगोष्ठी

21 मार्च, 2015 को संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा नूतन संवत्सर उत्सव-2072 के उपलक्ष में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्रीगुरुजी ने भारतीय संस्कृत व भारतीय संस्कृति का वास्तविक सच सबके सामने रखा और इस संवत्सर में घटित हर सकारात्मक पहलुओं को समझाया और नकारात्मकता से बचने के आसान तरीके भी सुझाए।

शहीद दिवस

23 मार्च 1931 को ब्रिटिश सरकार ने भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी की सजा दी थी। इनके बलिदान वाले दिवस को हम शहीद दिवस के रूप में मनाने के लिए राष्ट्रवादी संत श्रीगुरु पवन जी ने राष्ट्रीय सैनिक संस्थान के कार्यक्रम में पधारे और वहां उपस्थित जनसमूह को देशभक्त के गुण भी बताए।

राष्ट्रीय चेतना अभियान

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की 118वीं जयंती पर 23 जनवरी 2015 को जंतर-मंतर पर आयोजित कार्यक्रम में श्रीगुरु भैया जी सम्मिलित हुए और अपने विचार प्रस्तुत किये।

राष्ट्रीय शिक्षा की नवरचना

धर्मपाल शोधपीठ, संस्कृति मंत्रालय, मध्यप्रदेश सरकार द्वारा आयोजित राष्ट्रीय शिक्षा नीति के नवनिर्माण कार्यक्रम में श्रीगुरु भैयाजी ने मार्गदर्शन किया।

राम जन्मोत्सव कार्यक्रम

ग्रेटर नोएडा में आयोजित राम जन्मोत्सव कार्यक्रम में (27 मार्च, 2015) उपस्थित लोगों को श्रीगुरु जी ने श्रीराम के चरित्र व गुणों का महत्व समझाते हुए उन गुणों को जीवन में उतारने का आशीर्वाद दिया।

गोकुलम

श्रीगुरुजी की प्रेरणा से गोकुलम संस्था (28 मार्च, 2014) की नींव रखी गई थी। एक वर्ष पूर्ण होने पर संस्था के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस अवसर पर श्रीगुरुजी ने 'राम' के नाम महत्व की चर्चा करते हुए यह बताया कि ऐसा क्यों कहा जाता है कि राम से बड़ा राम का नाम? आपने बताया कि यह नाम बीजाक्षर है। राम शब्द का कंपन-ध्वनि तरंगों में विभक्त होता है- र-उ-म। तीनों शब्दों के अलग-अलग कार्य हैं। मर्यादापुरुषोत्तम राम से पूर्व भी यह नाम था, इसीलिए महर्षि विश्वामित्र ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम को यह नाम दिया।